आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 13/06/2026; Accepted: 20/6/2026; Published: 28/06/2026

महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष का दस्तावेज़ : 'आधे-अधूरे'

Dr. Deepa Kumari

Assistant Professor & HOD

Department of Hindi

D.B College Thalayolaparambu

Kerala

Dr. Deepa Kumari, महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष का दस्तावेज़: 'आधे-अधूरे', आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(259 -264)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21443524

शोध-सार:-

आधुनिक हिंदी नाटक के प्रमुख स्तंभ मोहन राकेश बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटककार हैं जिन्होंने भावुकता, आडम्बर व जुमलेबाजी से पृथक मानवीय जीवन के जटिल सामाजिक यथार्थ को प्रभावी तरीके से अपने नाट्य-सृजन का आधार बनाया। मोहन राकेश कृत यह कालजयी कृति आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य की एक महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक पड़ाव है, जिसमें आधुनिक महानगरीय मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन में विघटन के कारण को खोजने का प्रयत्न किया गया है। इस नाटक में आधुनिक महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी की ओर संकेत किया गया है। यह नाटक महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार के विघटन, आर्थिक तंगी, स्त्री-पुरूष संबंधों की जटिल परिस्थितियाँ, अस्तित्वगत अकेलेपन, दांपत्य व मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों का सूक्ष्म व प्रभावशाली विश्लेषण प्रस्तुत करता है। नाटक की नायिका सावित्री एक ऐसे आधुनिक महानगरीय जीवन का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ आर्थिक तंगी, टूटते रिश्ते, भावनात्मक रिक्तता, सुख, सुरक्षा व पूर्णता की तलाश मनुष्य को भीतर तक विखंडित करती है। नाटक जीवन-संघर्ष की विडंबनाओं के साथ-साथ पात्रों

की आंतरिक टूटन, पीड़ा और असंतोष को भी सजीव व मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करता है। नाटककार इस नाटक के जरिए यह सिद्ध करता है कि पूर्णता की तलाश वास्तव में एक भ्रम है।

बीज-शब्द:-आधे-अधूरे, आधुनिकता, महानगरीय, मनौवैज्ञानिक द्वंद्व, मध्यवर्ग, अस्तित्ववाद, दांपत्य-संघर्ष, यथार्थ, मनोविश्लेषण, विघटन, स्त्री-चेतना।

आधुनिक हिंदी रंगमंच के रचनाकारों में मोहन राकेश अग्रगण्य है। लहरों के राजहंस, आषाढ़ का दिन तथा 'आधे-अधूरे' उनका प्रसिद्ध नाटक है। 'आधे-अधूरे' (1969) भारतीय महानगरीय मध्यवर्ग के भीतर व्याप्त जटिलताओं, टूटते रिश्ते, मनोवैज्ञानिक तनाव व अस्तित्वगत संकटों को उजागर करने वाली एक प्रमुख नाट्य कृति है। इसमें मानव जीवन की 'अपूर्णताओं' व 'सम्पूर्णता की निरंतर खोज' को अत्यंत प्रभावी ढंग से उजागर किया गया है। "मोहन राकेश का तीसरा व सबसे लोकप्रिय नाटक आधे अधूरे है। जहाँ नाटककार ने मध्यवर्गीय परिवार की दमित इच्छाओ कुंठाओ व विसंगतियो को दर्शाया है। नाटक पति-पत्नी के बीच लगातार बढ़ते मनमुटाव, आर्थिक तंगी, गलतफहमियों और असंतोष को केंद्र में रखता है। पत्नी अपने बिखरते परिवार को संभालने की कोशिश करती है, परंतु हर प्रयास अधूरा रह जाता है। यह रचना मध्यवर्गीय जीवन की खोखली वास्तविकताओं और अधूरे रिश्तों का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करती है। समग्रत:, नाटक आधुनिक दंपतियों के असंतोष और पारिवारिक विघटन की स्थितियों को प्रभावपूर्ण ढंग से सामने लाता है। इस नाटक की पृष्ठभूमि एतिहासिक न होकर आधुनिक मध्यवर्गीय समाज है। 'आधे अधूरे' में वर्तमान जीवन के टूटते हुए संबंधो, मध्यवर्गीय परिवार के कलहपुर्ण वातावरण, विघटन, सन्त्रास, व्यक्ति के आधे अधूरे व्यक्तित्व तथा अस्तित्व का यथात्मक सजीव चित्रण हुआ है ।"1 इसमें महानगरीय मध्यवर्गीय पारिवारिक संरचना के भीतर निहित वैवाहिक मुद्दों का सूक्ष्म आलोचनात्मक चित्रण हुआ है। परिवार का प्रत्येक सदस्य पारिवारिक संघर्षों, आर्थिक तंगी, सुरक्षा, मनोवैज्ञानिक दवाब, अपूर्णता व अस्तित्वगत संकटों से जूझता हुआ दृष्टिगोचर होता है। सहज संवाद प्रधान भाषा में रचित यह नाट्य कृति दांपत्य व मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों, पारस्परिक संघर्षों व घरेलू रिश्तों की जटिलताओं को अत्यंत प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती है। आधे-अधूरे' हिंदी रंगमंच में आधुनिकतावादी नाट्य–चेतना का एक उल्लेखनीय व उत्कृष्ट कृति है, जिसमें महानगरीय मध्यवर्गीय जीवनबोध, मानसिक दबाव, आर्थिक व निरंतर संघर्षों को अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावपूर्ण ढंग से उकेरा गया है।

हिंदी रंगमंच की परंपरागत धारा से अलग मोहन राकेश का सर्वाधिक चर्चित नाटक 'आधे-अधूरे' आधुनिक शहरी मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताओं पर प्रकाश डालता है। "'आधे अधूरे' आज के जीवन के एक गहन अनुभव खण्ड को मूर्त करता है। इसके लिए हिंदी के जीवंत मुहावरें को पकडने की सार्थक, प्रभावशाली कोशिश की गई है।"2 'आषाढ़ का एक दिन' एवं 'लहरों के राजहंस' से भिन्न यह नाट्य कृति किसी ऐतिहासिक व प्रतीकात्मक आवरण के बजाय समकालीन महानगरीय मध्यमवर्गीय परिवार के संघर्षों का

प्रत्यक्ष दस्तावेज़ है। इस नाटक के केंद्रीय पात्र महेंद्रनाथ और उनकी पत्नी सावित्री आर्थिक, मानसिक तनाव व सामाजिक दबावों के चलते तनावपूर्ण दांपत्य जीवन व्यतीत करने को मजबूर हैं। सावित्री विभिन्न पुरुषों के माध्यम से पूर्णता हासिल करने का प्रयत्न करती है, किंतु उसे अधूरापन ही प्राप्त होता है। पति-पत्नी के बीच का यह द्वंद्व, मनमुटाव, आर्थिक तंगी, गलतफहमियों, सामाजिक-आर्थिक संघर्ष और असंतोष से उनके बच्चे भी प्रभावित होते हैं। इस प्रकार यह नाट्य कृति आधुनिक महानगरीय मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन की विभिन्न पहलुओं, दांपत्य के खोखलेपन, विघटन एवं स्त्री-पुरुष संबंधों की बढ़ती जटिलताओं का सजीव चित्रण है।

'आधे-अधूरे' सिर्फ एक नाट्य कृति ही नहीं है, बल्कि यह आधुनिक शहरी मध्यवर्गीय समाज में हो रहे जटिल परिवर्तनों का गहन मनौवैज्ञानिक दस्तावेज़ भी है। "आधे अधूरे' सिर्फ़ एक नाटक ही नहीं है। यह हमारे समाज, परिवार, व्यक्ति और उनके पारस्परिक सम्बन्धों में आए और लगातार आ रहे बदलाव का गम्भीर समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी है।"3 नाटक मानवीय मूल्यों का क्षरण, बढ़ती महत्वाकांक्षा, पारिवारिक जीवन में विघटन व खोखलेपन आदि सामाजिक परिवर्तन को इंकित करता है, जो स्वतंत्रता और देश के विभाजन के पश्चात साठ-सत्तर के दशक में शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में दृष्टिगोचर होता है। यह महानगरीय मध्यवर्गीय सामाजिक व पारिवारिक संकट वैश्वीकरण, बाज़ारवादी प्रवृत्तियाँ, पश्चिमी संस्कृति एवं मीडिया के प्रभाव से व्यापक रूप से स्पष्ट दिखाई देता है।

मोहन राकेश कृत 'आधे-अधूरे' नाटक एक महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार की कथा है। इस परिवार का प्रत्येक सदस्य मनोवैज्ञानिक व आर्थिक विघटन से ग्रस्त पूर्णता की तलाश करता है। नाटककार इस नाटक के जरिए महानगरों में निवास करने वाले मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त विसंगतियों का पर्दाफाश करता है। इसमें वैश्वीकरण व सामाजिक बदलाव के संदर्भ में शहरी मध्यवर्गीय परिवार के विघटन, टूटते रिश्तों एवं मनोवैज्ञानिक कुंठा सावित्री व महेंद्रनाथ के दांपत्य जीवन के जरिए अत्यंत प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। 'आधे-अधूरे' नाटक शहरी मध्यवर्गीय पारिवारिक विघटन, आर्थिक तंगी, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं और दांपत्य जीवन का प्रभावशाली एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण अत्यंत यथार्थपरक तरीके से प्रस्तुत करता है। "पता है कितना खर्च था उन दिनों इस घर का चार सौ रुपये महीने का मकान था। टैक्सियों में आना-जाना होता था। किस्तों पर फ्रिज खरीदा गया था। लड़के-लड़की की कान्वेंट की फीसें जाती थीं...।"4

नाटक में महेंद्रनाथ व्यापार में असफल होकर बेरोज़गार हो जाता है। तब उनकी सहधर्मिणी सावित्री परिवार का बोझ उठाने के लिए मजबूर हो जाती है। क्रमशः आर्थिक तंगी व दांपत्य तनाव से दोनों के बीच अलगाव होते जाते हैं। सावित्री पूर्णता की तलाश में भटकती है। वह अन्य पुरुषों से सम्पर्क बढ़ाती जाती है, लेकिन उसे कहीं भी पूर्णता हासिल नहीं होती। "महेंद्रनाथ अपनी पत्नी सावित्री से बहुत प्रेम करते हैं, किन्तु बेरोजगार होने के कारण वह पत्नी सावित्री के कमाई पर पलता हुआ अत्यंत दुखी है। उसकी स्थिति अपने ही परिवार में 'एक ठप्पा एक रबर की टुकड़े' की तरह है।"5 नाटक का शीर्षक ही उसके मूल सार को

उजागर करने में पर्याप्त है, जो मानव जीवन के टूटते संबंधों, परिवार में व्याप्त अधूरापन को अत्यंत सार्थक रूप में अभिव्यक्त करता है। मनुष्य खुद आधा–अधूरा प्रतीत होता है, स्त्री-पुरूष संबंध पूर्णता तक नहीं पहुँचते, दांपत्य जीवन का विघटन, असंतोष एवं पारिवारिक जीवन में भी असंगति दृष्टिगोचर होता है। सावित्री इस व्यापक असंतोष व अपूर्णता का सशक्त प्रतीक बनकर उभरती है। पारिवारिक तनाव से महेंद्रनाथ-सावित्री के बच्चे भी अत्यधिक प्रभावित होते हैं—बिन्नी, जो बड़ी बेटी है घर छोड़कर सावित्री के मित्र मनोज, जो अक्सर सावित्री से मिलने आता था के संग भाग जाती है, अशोक(बेटा) गैर-जिम्मेदार एवं छोटी बेटी किन्नी दिनों दिन विद्रोही व संवेदनहीन होती जा रही है। "कि दो आदमी जितना ज्यादा साथ रहें, एक हवा में साँस लें, उतना ही ज्यादा अपने को एक-दूसरे से अजनबी महसूस करे"6 इस प्रकार परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने ढ़ंग से आधे-अधूरे रह जाते हैं जो नाटक की केंद्रीय अनुभूति को उजागर करता है। इसमें शहरी मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष, आर्थिक तंगी, टूटते रिश्ते एवं आधुनिक सामाजिक जीवन की अस्तित्वगत बेचैनी को अत्यंत सुंदर तरीके से अंकित किया गया है। इसी वजह से 'आधे-अधूरे' आधुनिक हिंदी नाटक की एक महत्वपूर्ण व प्रभावशाली कृति बन जाती है। नाटक में चित्रित शहरी मध्यवर्गीय परिवार जो लगातार दांपत्य तनाव, बेरोज़गारी व आर्थिक तंगी एवं बच्चों के असंतोष से जूझता हुआ दिखता है। नाटक में चित्रित आर्थिक तंगी से टूटता परिवार, दांपत्य जीवन में संवादहीनता, बच्चों का विद्रोही स्वभाव आदि के कारण परिवार का प्रत्येक सदस्य मनोवैज्ञानिक दमन का शिकार बन जाता है। जो आधुनिक भारतीय शहरी मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। शीर्षक में व्यक्त 'अधूरापन' सभी पात्रों की अपूर्ण इच्छाओं, अधूरी आकांक्षाओं, असफल संबंधों और विखंडित जीवन का प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। "`आधे अधूरे' में आज की जीवन स्थितियां हैं। पूरी तरह से तो नहीं, लेकिन आंशिक रूप से इसे नॉर्वेजियाई नाटककार हेनरिक इब्सन के नाटक `द डाल्स हाउस' की मनोभूमि से जोड़ा जा सकता है। `द डाल्स हाउस' में आधुनिक यूरोप के पारिवारिक जीवन, पति- पत्नी के संबंधों में तनाव व एक स्त्री के स्वतंत्र फ़ैसले का स्वर मुखरित हुआ था। `आधे अधूरे' की स्त्री उस फ़ैसले तक नहीं पहुंच पाती। वजह यूरोप और भारत की भिन्नता है। तमाम दबावों के बावजूद भारतीय परिवार विघटित नहीं हुआ है। इसलिए `आधे अधूरे' की सावित्री चाहकर भी घर नहीं छोड़ पाती।"7

आधे-अधूरे' नाटक में मोहन राकेश के कथापात्र जीवन के अर्थ व लक्ष्य की खोज में निरंतर भटकते नजर आते हैं। पारिवारिक रिश्तों में असंतुष्टि के कारण प्रत्येक सदस्य स्थायी असुरक्षा, दिशाहीनता व मोहभंग के शिकार बन जाते हैं। हिंदी नाटक के इतिहास में अस्तित्ववाद का इतना सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक, निजी व तीक्ष्ण चित्रण बिरला ही मिलता है। नाटक की नायिका सावित्री का चरित्र चित्रण समकालीन आधुनिक मध्यवर्गीय स्त्री की दोहरी जिम्मेदारी को दर्शाता है जो घर संभालने के साथ-साथ पारिवारिक बोझ उठाने के कारण मानसिक तनाव व भावनात्मक रिक्तता महसूस करती हुई सामाजिक अपेक्षाओं एवं व्यक्तिगत अधूरी इच्छाओं के बीच जूझती हुई दिखाई पड़ती है। इस प्रकार नाटक की केंद्रीय पात्र सावित्री आधुनिक महानगरीय मध्यवर्गीय भारतीय स्त्री के मनोवैज्ञानिक प्रतीक बन जाती है, जो इस नाटक की केंद्रीय शक्ति

है। वह अपने व्यक्तित्व में आत्मनिर्भरता, मनोवैज्ञानिक तनाव व भावनात्मक रिक्तता को समेटे हुए प्रतीत होती है। वह जीवन में पूर्णता प्राप्त करने व रिश्तों में सतत् पूर्णता की खोज करती रहती है, पर उसके नसीब में वह लिखा नहीं होता। सामाजिक व पारिवारिक अपेक्षाएँ उस पर मानसिक दबाव डालते हैं जिससे उसके चरित्र में आधुनिक स्त्री-अस्मिता संबंधी कई पक्ष स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं।

इस नाटक में महेन्द्रनाथ असफल, बेरोज़गार एवं निकम्मा है। वह अपनी उत्तरदायित्वों के निर्वाहन में लापरवाही बरतने के कारण सावित्री पर निर्भर रहता है। महेन्द्रनाथ की दबे हुए अहंकार, विफलताओं एवं निकम्मेपन के फलस्वरूप परिवार का संतुलन बिगड़ जाता है। बिन्नी व अशोक समकालीन युवा पीढ़ी के कूंठा, मन:स्थिति, मानसिक विवशता और पारिवारिक विघटन के प्रतिनिधि पात्र हैं। वे अपने माता-पिता तथा परिवार में बढ़ती दूरियों तथा संवादहीनता को महसूस करते हैं। वे दोनों पारिवारिक विघटन के तनावपूर्ण स्थिति से प्रभावित होकर मानसिक संघर्ष का सामना करके विद्रोही स्वभाव का प्रदर्शन करते हैं। इनके जरिए समकालीन जीवन व समाज में बढ़ती पीढ़ियों के बीच की दूरी और टूटते रिश्तों का वास्तविक चित्रण किया गया है। सावित्री के जीवन में आए चारों पुरुष - सिंघानिया, जगमोहन, जुनेजा और मनोज- वस्तुत: महेन्द्रनाथ के ही विविध रूपों का विस्तार नजर आते हैं। वे सभी पात्र अपने-अपने विशिष्ट तरीके से उसी अधूरेपन व दोषपूर्ण पुरुष-प्रवृति की पुनरावृत्ति करते हैं। इस प्रकार नाटक यह दर्शाता है कि सावित्री जिस आदर्श और 'पूर्ण' पुरुष की तलाश करती है, अंतत: वास्तविक जीवन में उपलब्ध नहीं होता है, क्योंकि समाज के प्रत्येक संबंध अपनी सीमाओं, अंतर्विरोधों, कमजोरियों, अधूरेपन से घिरा रहता है। अनेक प्रभावशाली बिंबों व प्रतीकों का सफल प्रयोग नाटक में हुआ है। सावित्री-महेन्द्रनाथ के परिवार का अव्यवस्थित व तनावपूर्ण वातावरण सभी सदस्यों के अव्यवस्थित जीवन, अकेलेपन और जीवन-संघर्ष को दर्शाता है। पारिवारिक सदस्यों के बीच निरंतर होने वाले आरोप व प्रत्यारोप उनके जीवन में व्याप्त बेचैनी, मानसिक तनाव एवं असुरक्षित जीवन स्थितियों को उजागर करते हैं। सावित्री के जीवन में विभिन्न पुरुषों के साथ बदलते संबंध, उसकी अधूरी इच्छाओं, पूर्णता की तलाश व व्यक्तित्व की चंचलता उसके अस्थिर भावनात्मक जीवन की ओर संकेत करता हैं। "इस तरह का नाटक लिखने के कारण भी मोहन राकेश आधुनिक भारतीय नाटककारों में अग्रणी हैं। उन्होंने इस नाटक में अपने समय की आवाजों को सुना। कामकाजी महिलाओं की व्यथा को सुना, युवा लड़के-लड़कियों की परेशानियों को सुना, किशोर होती लड़की की यौन- उत्सुकता को भी सुना।"8

नाटक तीखे, कटवे व तनावपूर्ण संवाद से युक्त हैं। इसमें सीधे-सीधे आधुनिक महानगरीय दांपत्य जीवन, पारिवारिक अशांति, कड़वाहट, विघटन व मनोवैज्ञानिक द्वंद्व की ओर इशारा किया गया है। संवादों में निहित तीक्ष्णता नाटक के तनावग्रस्त वातावरण को उजागर करता है जो उसे वास्तविक व प्रभावी बनाता है। इस नाटक की प्रमुख विशेषता यह है कि इसकी संपूर्ण घटनाएँ एक ही स्थल में संपन्न होता है। जिस कुशलता से सीमित मंच के भीतर ही कथापात्रों के मानसिक तनाव, संघर्ष व मनोवैज्ञानिक द्वंद्व का चित्रण हुआ है, वह मोहन राकेश की नाट्य–दृष्टि, सूक्ष्म कलात्मक गहराई और सृजनात्मक संवेदनशीलता का प्रमाण है। 'आधे-अधूरे' नाटक हिंदी रंगमंच को एक वैचारिक गहराई प्रदान करने से मील का पत्थर माना जाता है।

हिंदी नाटक के इतिहास में 'आधे-अधूरे' पारंपरिक लोक–नाट्य शैली से पृथक मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। इसमें पाश्चात्य आधुविकतावादी वैचारिक प्रवृत्तियों को भारतीय जीवन मूल्य एवं संस्कृति के अनुरूप समन्वित किया गया है। इसमें अत्यंत विश्लेषणात्मक व आलोचनात्मक तरीके से स्त्री-पुरूष संबंधों, मध्यवर्गीय महानगरीय पारिवारिक विघटन, मनोवैज्ञानिक द्वंद्व एवं दांपत्य तनाव को दर्शाया गया है। इस प्रकार यह रचना भाव-संवेदना व नाट्य-शिल्प दोनों ही स्तरों पर आधुनिक हिन्दी नाटक की एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में सिद्ध होती है। मोहन राकेश कृत यह उत्कृष्ट नाटक अपने समय का सशक्त दस्तावेज़ होने के कारण आज भी विश्वविद्यालयों एवं रंगमंच में पढ़ा और मंचित किया जाता है, इसलिए आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. https://hi.wikipedia.org
2. डॉ. जयकरण यादव: मोहन राकेश के नाटकों में मानवीय संबंध निरूपण एवं शिल्प विधान वशिष्टय: पृ. सं. 75
3. https://bharatdiscovery.org
4. मोहन राकेश: आधे आधूरे: राधाकृष्ण प्रकाशन: पृ. सं. 24
5. https://abhivyakti755583453.wordpress.com
6. मोहन राकेश: आधे आधूरे: राधाकृष्ण प्रकाशन: पृ. सं. 32-33
7. रवीन्द्र त्रिपाठी: मोहन राकेश के `आधे अधूरे' की अद्वितीयता: 21 Feb 2025
8. वही।
9. https://www.drishtiias.com/hindi/mains
10. https://www.hindisamay.com
11. https://mdu.ac.in/UpFiles/UpPdfFiles/2020/Jan/B-adunik-sahitya-final.pdf
12. http://gadyakosh.org ›
13. *https://www.satyahindi.com/variety/mohan-rakesh-aadhe-adhure-*

****